चेतना विकास मूल्य शिक्षा (जीवन विद्या) अध्ययन शिविर का प्रतिवेदन

(15 जुलाई 2009 से 20 जनवरी 2010 तक)

विश्व के इतिहास में मानव का संपूर्ण आयामों में अध्ययन की प्रथम घटना के रूप में जीवन विद्या अध्ययन शिविर को जाना एवं पहचाना गया। यह अनूठी शुरूआत राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,रायपुर एवं अभ्युदय संस्थान अछोटी,जिला दुर्ग के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में इसकी आवश्यकता की पहचान एवं पूर्ति की निरंतरता का प्रारंभ बिन्दु स्वरूप संपन्न अध्ययन संबंधी जानकारियां अधोलिखित है –

उददेश्य

- सार्वभौम मानवीय आचरण सम्पन्न मानव तैयार करना
- विश्वासपूर्वक जीने की योग्यता सम्पन्न करना
- मानव स्वयं में समाधान पूर्वक, परिवार में समृद्धि पूर्वक, समाज में भय मुक्त व प्रकृति के साथ तालमेल (संतुलन) पूर्वक जीने की योग्यता से सम्पन्न हो सके।
- मानवीय शिक्षा से समग्र विकास (अखण्डसमाज सार्वभौमव्यवस्था)
- 20 वर्ष की शिक्षा पूर्ण कर मानव उत्सवपूर्वक जी सके, ऐसी योग्यता विकसित करना

- मानवीय शिक्षा से समग्र विकास (अखण्डसमाज सार्वभौमव्यवस्था)
- 20 वर्ष की शिक्षा पूर्ण कर मानव उत्सवपूर्वक जी सके, ऐसी योग्यता विकसित करना

शिविर का स्वरूप और प्रतिभागियों का विवरण

- देश भर से कुल 60 शिक्षक/स्वयं सेवी स्वयं की सहमति से अध्ययन शिविर में शामिल हुए जिसमें 20 दिन संस्थान में रहकर अध्ययन का कार्य तथा 10 दिन विभिन्न संस्थानों में परिचय शिविरों द्वारा स्वमूल्यांकन करते हुए अपनी अध्ययन गति को बढ़ाए।
- छः माह के अध्ययन शिविर में शामिल प्रतिभागियों (कुल 60) का विवरण निम्नानुसार है –

छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा विभाग	51
अन्य विभाग	01

उत्तरप्रदेश स्कूल शिक्षा विभाग	02
महाराष्ट्र स्कूल शिक्षा विभाग	02
मध्यप्रदेश अन्य विभाग (स्वयं सेवी)	01
पश्चिम बंगाल (स्वयं सेवी)	01
दिल्ली (स्वयं सेवी)	02

प्रबोधक –

- श्री सोम देव त्यागी
- श्री साधन भट्टाचार्य
- श्री रणसिंग आर्य
- श्री योगेश शास्त्री
- श्री अंजनी अग्रवाल
- श्रीमती सुवर्णा शास्त्री

वांगमय जिनका अध्ययन किया गया–

- दर्शन
- वाद
- शास्त्र
- अन्य

दर्शन से संबंधित वांगमय

- मानव व्यवहार दर्शन
- कर्म दर्शन
- अभ्यास दर्शन
- अनुभव दर्शन

वाद से संबंधित वांगमय

- समाधानात्मक भौतिकवाद
- व्यवहारात्मक जनवाद
- अनुभवात्मक अध्यात्मवाद

शास्त्र से संबंधित वांगमय

- आवर्तनशील अर्थशास्त्र
- व्यवहारवादी समाज शास्त्र
- मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान

अन्य वांगमय

- विकल्प
- अध्ययन बिन्दु
- जीवन विद्या एक परिचय
- मानवीय संविधान सूत्र व्याख्या

अध्ययन पद्धति

- प्रबोधकों एवं शिविरार्थियों द्वारा विभिन्न वांगमयों का व्यक्तिगत एवं सामूहिक पठन कर परस्पर विचार विमर्श करते हुए विभिन्न अवधारणाओं को गहराई से समझने का निरंतर प्रयास किया गया।
- इसमें अध्ययन बिन्दु को स्वयं में जांचने एवं विश्लेषित करने पर निरंतर बल दिया गया जिससे सभी उद्वेलित एवं प्रफुल्लित महसूस करते थे तथा अध्ययन कभी उबाऊ नहीं लगा।

मानव व्यवहार दर्शन का मूल तत्व

- मानव जड़ अर्थात् शरीर तथा चैतन्य अर्थात् जीवन का संयुक्त साकार रूप है।
- भौतिक रासायनिक प्रकृति ही विकास क्रम में है। विकसित रूप में जीवन ही चैतन्य इकाई है।
- मानव का समूचा व्यवहार कृतज्ञता तथा कृतघ्नता के आधार पर ही निर्भर करता है तथा मूल्यॉकित व समीक्षित होता है।

- मनुष्य मात्र द्वारा समस्त प्रयास एवं प्रयोग तृप्ति अथवा सुख के लिये है।
- प्रकृति की चारों अवस्थाओं (पदार्थ, प्राण, जीव, ज्ञान) की सृष्टि की अपनी विशेषताएं हैं तथा विशिष्टताएं रूप, गुण, स्वभाव और धर्म से संबंधित है।
- विश्राम (जागृति) के लिए ही इस पृथ्वी पर मानव अपने महत्व को जानने पहचानने के प्रयास एवं प्रयोग में व्यस्त है।
- मानव की कुल तीन प्रकार से गणना होती है– अमानवीयता, मानवीयता, अतिमानवीयता।
- अमानवीय स्वभाव– हीनता, दीनता एवं क्रूरता।
- मानवीय स्वभाव– धीरता, वीरता, उदारता
- अतिमानवीय स्वभाव– धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा।
- हर मानव अमानवीयता से मानवीयता एवं अतिमानवीयता के लिए निरंतर प्रयासरत है।
- मानवीय आचरण मूल्य, चरित्र एवं नैतिकता से सुनिश्चित होता है।
- जागृति के मूल में सिद्धांत यह है कि मानव सही में एक है। जबकि मानव भ्रमवश गलती में अनेक है।
- वातावरण एवं अध्ययन सुपात्र अथवा कुपात्र बनाने में सहायक है।
- भ्रमित मानव कर्म करते समय स्वतंत्र व फल भोगते समय परतंत्र होता है।
- मानव चार प्रकार से भयभीत है– पद भय, धन भय, मान भय, प्राण भय।
- मानव के सुखी होने का नियम
    - बलवान– दयापूर्वक सुखी होता है।
    - बुद्धिमान– विवेक तथा विज्ञान पूर्वक सुखी होता है।
    - रूपवान– सद्चरित्रता पूर्वक सुखी होता है।
    - पदवान– न्याय पूर्वक सुखी होता है।
    - धनवान– उदारता पूर्वक सुखी होता है।
    - विद्यार्थी– निष्ठा पूर्वक सुखी होता है।
    - सहयोगी– कर्त्तव्य पूर्वक सुखी होता है।

- साथी– दायित्व पूर्वक सुखी होता है।
- तपस्वी– संतोष पूर्वक सुखी होता है।
- लोकसेवक– स्नेह पूर्वक सुखी होता है।
- सह–अस्तित्व (ईश्वर) में– मानव प्रेम पूर्वक सुखी होता है।
- रोगी तथा बालक के साथ– आज्ञापालन के रूप में सुखानुभूतियॉ सिद्ध हुई है।

- न्याय, धर्म, सत्य पूर्वक जीना ही पूर्ण जागृति है।
- संज्ञानीयता से ही संवेदनाएं नियंत्रित होती है।
- सुख, शान्ति, संतोष एवं आनन्द यह सुख की चार अवस्थाएॅ है।
- रूप, बल एवं बुद्धि का विकास आहार, विहार व व्यवहार की संयमता पर है।
- मानव समाज में परस्पर सात सम्बन्ध दृष्टिगोचर हैं –
    - पिता–माता एवं पुत्र–पुत्री सम्बन्ध
    - पति–पत्नी सम्बन्ध
    - गुरु–शिष्य सम्बन्ध
    - भाई–बहिन सम्बन्ध
    - साथी–सहयोगी सम्बन्ध
    - मित्र–मित्र सम्बन्ध
    - व्यवस्था व समग्र व्यवस्था सम्बन्ध

कर्म दर्शन का मूल तत्व

- हर इकाई व्यापक में डूबे, भीगे, घिरे होने के कारण ऊर्जित एवं क्रियाशील है।
- प्रत्येक इकाइयों में परस्पर पूरकता है जिसके कारण पहचानना एवं निर्वाह करना होता है। यही प्रत्येक इकाई के निश्चित आचरण का आधार है।
- कार्य का क्रम ही कर्म है जो कि निरंतर है।
- कर्म को समझना ही कर्म दर्शन है।

- समझने के लिए जो जिज्ञासा है वही पात्रता है और यही ग्रहण क्षमता है जिसके आधार पर समझना होता है।

अभ्यास दर्शन का मूल तत्व

- अभ्युदय के लिये आकांक्षा और हर्ष सहित किया गया प्रयास ही अभ्यास है।
- सतर्कता और सजगता ही क्रियापूर्णता और आचरण पूर्णता है।
- इसके माध्यम से हम स्वयं का शोध करते हैं कि हम कहॉ खड़े हैं।

कर्माभ्यास

- क्रियाशक्ति अर्थात् शब्द,रूप,रस,गन्ध,इन्द्रियों के सदव्यय से–
  - नियम पूर्वक उत्पादन जिसके प्रतिफल में भौतिक समृद्धि।
  - इसके लिये भौतिक शास्त्र का अध्ययन।
  - कुशलता, निपुणता एवं पाण्डित्य पूर्वक प्राकृतिक एश्वर्य पर उपयोगिता एवं कला मूल्य की स्थापना।

व्यवहाराभ्यास

- इच्छाशक्ति अर्थात् आशा, विचार, इच्छा के सदव्यय से–
  - न्यायपूर्ण व्यवहार एवं धर्मपूर्ण विचार के द्वारा बौद्धिक समाधान।
  - इसके लिए बौद्धिक शास्त्र का अध्ययन।
  - बौद्धिक समाधान मानवीयता की सीमा मे ही होगा।

चिंतनाभ्यास

- ज्ञानशक्ति के सद्व्यय से–
  - इसके द्वारा संस्कारों में गुणात्मक परिवर्तन होता है।
  - इसमें यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता का निरीक्षण परीक्षण होता है।
  - इसके लिए मध्यस्थ दर्शन का अध्ययन आवश्यक है।
  - मध्यस्थ दर्शन के अनुसार अस्तित्व ही सहअस्तित्व है।

अनुभव दर्शन का मूल तत्व

- व्यापक सत्ता के रूप में ब्रह्म सत्य है तथा इसमें डूबे, भीगे, घिरे होने वश समस्त इकाइयां सहित यह जगत शाश्वत् है।

- मानव ही कर्ता, दृष्टा, भोक्ता पद में रहते हुए जागृति के लिए सतत् प्रयासरत है।
- जीवन रूप में मैं हूँ तथा मन, वृत्ति, चित्त एवं बुद्धि सभी मेरे हैं जो मेरी जागृति में सहायक हैं। जिनमें मध्यस्थ क्रिया के रूप में आत्मा है।
- जड़ एवं चैतन्य इकाईयों के रूप में प्रकृति एवं व्यापक ब्रह्म के रूप में पुरुष का सह–अस्तित्व हमेशा रहा है।
- असंग्रह, स्नेह, विद्या, सरलता, सहजता, अभय ही क्लेश से मुक्ति और हर्ष के लक्षण हैं, यही समाधान है जो निरंतर है।
- सह–अस्तित्वानुभूति के रूप में ब्रह्मानुभूति ही पूर्ण समाधान है, यही आनन्द की निरंतरता है यही पूर्ण विश्राम है।
- अनुभव पूर्ण मनुष्य में मानवीयता पूर्ण व्यवहार सहज रूप में पाया जाता है, यही सामाजिकता है।
- मानव अपने से कम विकसित (जड़ प्रकृति) के साथ उत्पादन, समान के साथ व्यवहार, अधिक श्रेष्ठ का सान्निध्य और व्यापकता में अनुभव करता है।
- जिस मनुष्य के उत्पादन का अधिकांश वितरण में और न्यून अंश उपयोग, सदुपयोग के निमित्त प्रयुक्त होता है वही श्रेष्ठ मानव है। वही ब्रह्मानुभूति कर सकता है।
- यथार्थ की अनुभूति योग्य क्षमता, योग्यता, पात्रता को पा लेना ही जागृति है।
- प्रत्येक इकाई का विकास व ह्रास ऊर्जा के अंतर्नियोजन या बहिर्गमन की प्रक्रिया पर आधारित है।
- प्रकृति की इकाईयों में अन्तिम ह्रास विकास का दर्शन स्पष्ट होना तथा उनमें पाये जाने वाले नियमों का विश्लेषित होना ही अध्ययन है।

समाधानात्मक भौतिकवाद का मूल तत्व

- भौतिकवादियों के अनुसार– संसार संघर्ष विधि से विकसित हुआ है।
- आदर्शवादियों के अनुसार– जगत ईश्वर से उत्पन्न हुआ है।
- मध्यस्थ दर्शन के अनुसार प्रत्येक एक इकाई अपने वातावरण सहित पूर्ण है।
- प्रत्येक एक अपने 'त्व' सहित व्यवस्था है और समग्र व्यवस्था में भागीदार है।
- प्रत्येक एक अपने स्वभाव गति में विकास की ओर और आवेशित गति में ह्रास की ओर गतिशील होता है।

- अध्ययन करने की संपूर्ण वस्तु अस्तित्व ही है।
- अध्ययन में केवल तीन वस्तु है–
    - जीवन ज्ञान
    - अस्तित्व दर्शन ज्ञान
    - मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान
- अध्ययन करने वाली वस्तु मनुष्य है।
- जीवन नित्य है, जीवन के लिए शरीर एक साधन है ।
- अस्तित्व में कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो पैदा होती हो अथवा जो है वह मिट जाता हो। इसलिए इसमें है का अध्ययन एवं होने की चर्चा है।
- विज्ञान– कालवादी, क्रियावादी, निर्णयवादी।
- विवेक– जीवन का अमरत्व, शरीर का नश्वरत्व, व्यवहार का नियम।

- व्यवहार के नियम–
    - बौद्धिक नियम (असंग्रह, स्नेह, विद्या, सरलता, अभय)
    - सामाजिक नियम (स्वधन,स्वनारी/स्वपुरूष एवं दयापूर्ण कार्य व्यवहार)
    - प्राकृतिक नियम (पूरकता, उदात्तीकरण, विकास, त्व सहित व्यवस्था)
- चेतना विकास मूल्य शिक्षा द्वारा– जीव चेतना से मानव चेतना में संक्रमण।
- प्रचलित पारंपरिक (भौतिकवाद एवं आदर्शवाद) विधियों से सत्य बोध नहीं हो पाने के कारण अनुभवात्मक अध्यात्मवाद की आवश्यकता रही है।

अनुभवात्मक अध्यात्मवाद का मूल तत्व

- अनुभवमूलक अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन विधि से सर्वमानव में निहित संपूर्ण और असंपूर्णता को समझने, कल्पना, विचार और इच्छाओं का गम्य स्थली दिखाई पड़ती है।
- जीवन चैतन्य इकाई है, यह परमाणु अणु बन्धन मुक्त, आशा बन्धन से युक्त अपने कार्य कारिता को प्रकाशित करता है।
- संज्ञानशीलता और संवेदनशीलता का संतुलन–संगीत परमावश्यक है।
- जीवन हर नस्ल, हर रंग, हर देश, हर काल में समान रूप में होता है।

- अनुभव का मूल रूप जानने मानने का तृप्ति बिन्दु ही है।
- जानने का मूलतत्व सह–अस्तित्व रूपी अस्तित्व ही है।

व्यवहारवादी समाजशास्त्र का मूल तत्व

- मानव जाति एक है।
- सर्व मानव में मानवत्व समान, शुभाकांक्षा समान एवं मानव धर्म समान है।
- मानव में, से, के लिए यह धरती एक अखंड है। मानव भाषा कारण, गुण, गणित के अर्थ में समान है।
- मानवीय सभ्यता, संस्कृति, विधि, व्यवस्था, सर्व मानव के लिए समान है।
- सर्व मानव में लक्ष्य समान है– समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व।
- चाहने–होने के मध्य में मानव मानवीयता पूर्ण विधि से आचरण करना ही एक मात्र विधि है। यही मानवीय संविधान है।
- स्वायत्त मानव ही परिवार मानव के रूप में प्रमाणित होते हैं। स्वायत्त मानव की सहज अभिव्यक्ति परिवार व्यवस्था में और समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने की अर्हता से परिपूर्ण रहता है। स्वायत्त मानव का अर्थ है–
    - स्वयं के प्रति विश्वास
    - श्रेष्ठता के प्रति सम्मान
    - प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन
    - व्यवहार में सामाजिक
    - व्यवसाय में स्वावलम्बी
- मानव, मनाकार को (सामान्य आकांक्षा व महत्वाकांक्षा संबंधी वस्तुओं और उपकरणों के रूप में तन, मन, धन सहित श्रम नियोजन पूर्वक) साकार करने वाला।
- मनःस्वस्थता अर्थात् सुख, शांति, संतोष, आनन्द सहज अपेक्षा सहित आशावादी है।
- मानव, बौद्धिक समाधान तथा भौतिक समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व में प्रमाण का स्रोत व प्रमाण परम्परा है।
- समाज का तात्पर्य पूर्णता एवं उसकी निरंतरता से है।
- राज्य का तात्पर्य वैभव से है।

- अस्तित्व में तीन चरणों में पूर्णता और उसकी निरंतरता का होना देखा गया है। यह गठन पूर्णता, क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता और उसकी निरंतरता है।
    - गठनपूर्णता के अनन्तर जीवन व उसकी निरंतरता
    - क्रियापूर्णता के अनन्तर समाज और उसकी निरंतरता
    - आचरण पूर्णता के अनन्तर प्रमाणिकता और उसकी निरंतरता होती है।
- अस्तित्व में रहस्य, अवरोध व संघर्ष नहीं है। विरोध नहीं है, विद्रोह नहीं है, विपन्नता नहीं है। बड़े–छोटे के रूप में कुंठा निराशा नहीं है। युद्ध व शोषण नहीं है। ये सभी नकारात्मक पक्ष मानव के द्वारा अपनाया हुआ भ्रमित परंपरा की देन है।

आवर्तनशील अर्थशास्त्र का मूल तत्व

- अर्थशास्त्र का अध्ययन समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व क्रम में है।
- समृद्धि का धारक वाहक एक परिवार होता है।
- व्यापार विधि से सार्वभौम शुभ (समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व) घट नहीं सकता।
- विज्ञान वैज्ञानिक नियमों और सिद्धान्तों से मानव का अध्ययन सर्वतोमुखी विधि से सम्पन्न नहीं हो पाया है।
- जीवन ही दृष्टा कर्ता भोक्ता पद में होने के कारण अध्ययन करने में समर्थ है।
- जागृति का स्वरूप जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना है।
- संपूर्ण मूल्यों का स्वरूप जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य, वस्तु मूल्य के रूप में है।
- मानवीय परम्परा का स्वरूप मानवीय शिक्षा, मानवीय संस्कार, मानवीय संविधान के रूप में सार्थक है।
- समाधान = विश्राम = जागृति।
- अर्थशास्त्र का तात्पर्य तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग, सुरक्षा और समृद्धि के रूप में है।
- विकास नियम है, ह्रास भी नियम है।
- क्रिया श्रम, गति, परिणाम का संयुक्त रूप है।
- अभाव का अभाव ही समृद्धि है।

- मानव के वैभव का स्वरूप न्याय सुलभता, उत्पादन सुलभता और विनिमय सुलभता है।
- जो उत्पादन कार्य में भागीदार नहीं है उनका मानवीयता पूर्ण मनुष्य होने के रूप में प्रमाणित होना सम्भव नहीं है।
- अस्तित्व में कहीं लाभ–हानि का स्थान नहीं है।
- शोषण का संपूर्ण स्वरूप धरती का ही शोषण है।
- लाभोन्मादी अर्थचिंतन समाज रचना और व्यवस्था का आधार नहीं है।
- व्यवस्था में जीने का प्रमाण वर्तमान में विश्वास है।
- मूलयॉकन श्रम का ही हो पाता है न कि प्रतीक वस्तुओं का।
- सम्पूर्ण आवश्यकता शरीर के पोषण संरक्षण और समाज गति में उपयोग, सदुपयोग और प्रयोजनशील है।
- किसी वस्तु का उत्पादन अकेले से होता नहीं, एक से अधिक लोगों में ही उत्पादन सम्भव है।
- भोग के लिए किये गये व्यवहार विवशता है, इसकी पूर्ति सम्भव नहीं है।

अध्ययन अवधि में हमें प्रेरित करने वाले प्रमुख आगंतुक

- श्रीमती डी. पुरन्देश्वरी, केन्द्रीय राज्य मन्त्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
- डा. रमन सिंह जी, मुख्य मन्त्री, छ.ग.शासन।
- श्री बृजमोहन अग्रवाल जी, शिक्षा मन्त्री, छ.ग.शासन
- श्री राहुल गांधी जी, सांसद एवं महासचिव, भारतीय राश्ट्रीय कॉन्ग्रेस।
- सुश्री मीनाक्षी नटराजन, सांसद एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष, एन.एस.यू.आई.।
- श्री नन्द कुमार साय जी, सांसद।
- श्री रामप्रताप सिंह, संगठन मन्त्री भा.ज.पा.।
- श्री रमाशंकर अग्निहोत्री, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता वि.वि. रायपुर।
- श्री जे. एस. राजू जी(आई.ए.एस.), संयुक्त सचिव एवं महानिदेशक, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
- श्री ए. के. विजय वर्गीय जी(आई.ए.एस.), मुख्य सूचना आयुक्त एवं पूर्व मुख्य सचिव, छ.ग.शासन।
- श्री नन्द कुमार जी(आई.ए.एस.), सचिव, स्कूल शिक्षा एवं संचालक एस.सी.ई.आर.टी., छ.ग.शासन
- श्री दिनेश उपाध्याय जी (आई.एफ.एस.), प्रबोधक, रायपुर।

- डा. एस. के. पाण्डेय जी, कुलपति, रवि शंकर विश्व विद्यालय रायपुर।
- डा. प्रताप बी देशमुख जी, निदेशक, एस.एस.सी.ई.टी. भिलाई।
- डा. आर. आर. गौड़ जी, कन्सल्टेन्ट, राष्ट्रीय मूल्य शिक्षा केन्द्र, आई.आई.टी. दिल्ली।
- डा. परमेश्वर राव, पूर्व नासा वैज्ञानिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता,हैदराबाद
- श्री भरत मनसाटा, कृषि विशेषज्ञ एवं बांसुरीवादक, कोलकाता।
- श्री बी. आर. अग्रवाल जी, जोन कमिश्नर, नगर निगम एवं प्रबोधक रायपुर।
- श्री एन. पी. कौशिक जी, संयुक्त संचालक, एस.सी.ई.आर.टी., रायपुर।
- श्री राजीव सांगल जी एवं श्रीमती निशा सांगल जी, आई.आई.आई.टी. हैदराबाद।
- श्री रविन्द्र शर्मा, कला आश्रम, आदिलाबाद, आ.प्र.।
- श्री पवन गुप्ता जी एवं श्रीमती अनुराधा जी, सिद्ध, मसूरी, उत्तराखण्ड।
- श्री अशोक सिरोही, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश।
- श्री राकेश गुप्ता जी एवं श्रीमती प्रियंका जी, बैंगलुरु।
- श्री अतुल विज़ जी एवं श्रीमती जयश्री जी, बैंगलुरु।
- श्री अनुराग जी एवं श्रीमती अनिशा जी, देहरादून।
- श्री एवं श्रीमती अशोक गोपाला जी, देहरादून।
- डा. बी. एल. दायमा जी. एवं श्रीमती गीता जी, इन्दौर।
- श्री सुरेन्द्र पाठक जी एवं श्रीमती सुनीता पाठक जी, सोमय्या विद्या विहार, मुंबई।
- डा. परदेशी राम वर्मा, साहित्यकार, भिलाई।
- श्री प्रेम भाटिया जी, प्रबोधक, दिल्ली।
- श्री महेन्द्र जी, प्रबोधक, कनाडा।
- श्री दीपक कौशिक जी, प्रबोधक, शास. इन्जीनियरिंग कॉलेज, बिलासपुर।
- सत्य प्रकाश भारत, सामाजिक कार्यकर्ता, भारत जोड़ो अभियान।
- श्रीमती सुनीता जैन, प्रबोधक, दिल्ली।

प्रमुख उपलब्धियां

- दर्शन के सभी वांग्मय का गहन पठन हुआ जिससे यथार्थ को समझने तथा समझ कर जीने के प्रति विश्वास बढ़ा है।
- दर्शन की वस्तु को शिक्षा की विषय वस्तु के रूप में पाठ्यक्रम में लाया जा सकता है यह विश्वास बढ़ा है।
- जीवन का सही स्वरूप स्पष्ट होते ही सुख का भास–आभास होने लगा है।

- शिक्षा विभाग से ही 50 प्रबोधक तैयार हैं जो कि दर्शन पर परिचय शिविर करा सकते हैं।
- शिक्षा विभाग से ही 26 प्रबोधक तैयार हैं जो कि दर्शन पर अध्ययन शिविर करा सकते हैं।
- मानव के बारे में स्पष्ट जानकारी मिलने से वसुधैव कुटुम्बकम के प्रति सहज स्वीकृति हुई है जिससे समग्र सोच का दायरा विकसित हुआ है।

शिविरार्थियों के स्वमूल्यांकन का विस्तृत विवरण

कुल 60 में से 58 शिविरार्थियों ने अपना स्वमूल्यांकन निम्नांकित 3 बिन्दुओं के आधार पर किया –

1. **मैं समझा हूं , प्रमाणित हूं।**
2. **मैं समझा हूं , प्रमाणित करूंगा, प्रेरक हूं।**
3. **समझने के लिए और अध्ययन की आवश्यकता हैं , प्रेरक हो सकता हूं।**

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर स्वमूल्यांकन सूची निम्नानुसार है–

क.	बिन्दु क्रं.1	बिन्दु क्रं.2	बिन्दु क्रं.3
1	निरंक	राधेश्याम बघेल	जितांशु प्रसन्न वर्मा
2		कृष्णकुमार साहू	अवनीश पात्र
3		ओम नारायण शर्मा	एफ.आर. यादव
4		केशव राम साहू	टेसूलाल धुरंधर
5		पुराणिक राम सिन्हा	गणेश एक्का
6		प्रभुराम गंगबोईर	आसुतोष नीरज
7		चंद्रहास साहू	देवेश वर्मा
8		अंगद प्रसाद कैवर्त	कु.सुभद्रा यादव
9		जितेन्द्र साहू	संजय पांडे
10		रेखराज साहू	लोकनाथ साहू
11		सुदर्शन कैवर्त	रवि सिन्हा
12		बाबू लाल नायक	श्रवण शुक्ला
13		कु.विनीता श्रीवास्तव	रवि तामगाड़गे
14		उद्धव राठौर	विधि
15		योगेश्वर साहू	
16		राजेश मानव	
17		एच.एल.साव	

18		के.डी. मिश्रा	
19		रविशंकर साहू	
20		राजेश कुमार शर्मा	
21		नेहरू लाल प्रधान	
22		कोमल सिंह महावीर	
23		शत्रुध्न लाल मिर्धा	
24		मंगल दास हेवार	
25		खोडस राम कश्यप	
26		टी.एन.मिश्रा	
27		सुरेन्द्र गुप्ता	
28		वेणुधर इजारदार	
29		रामेश्वर वर्मा	
30		रमेश कुमार राजपूत	
31		राधेश्याम साहू	
32		संजीव कुमार चतुर्वेदी	
33		गेंद लाल पटेल	
34		घनश्याम देवांगन	
35		वीरेन्द्र साहू	
36		श्रीमती विमलेश त्रिपाठी	
37		श्रीमती उत्तरा वर्मा	
38		भुवनेश्वर वर्मा	
39		अभय राम गजेन्द्र	
40		ओम प्रकाश चंद्राकर	
41		मनोहर लाल साहू	
42		मुकेश देवांगन	
43		प्रकाश प्रधान	
44		लोकेश्वर साहू	

भावी कार्यक्रम

- अध्ययन की गति बनाये रखते हुए मानवीय आचरण प्रस्तुत करना।
- शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं समाज के हर वर्गों के लोगों को परिचय शिविर के माध्यम से जीवन विद्या का परिचय देना।
- अध्ययन के इच्छुक शिक्षकों/व्यक्तियों को दर्शन का अध्ययन कराना।
- मानवीय चेतना से सम्पन्न शिक्षा देने वाले अन्य संस्थानों जैसे सिद्ध मसूरी, अरविंदो आश्रम, पाण्डिचेरी आदि का शैक्षिक भम्रण कर प्रदेश की शैक्षिक व्यवस्था में मानवीयता का समावेश करना।
- प्रत्येक माह दो दिन एस.सी.ई.आर.टी. रायपुर में इन सभी प्रतिभागियों की बैठक रखना जिसमें उनकी उपलब्धि, जिज्ञासा एवं भावी कार्यक्रम पर विस्तृत चर्चा की जा सके।

राधेश्याम बघेल

कृष्णकुमार साहू

सीमेट,एस.सी.ई.आर.टी. रायपुर